IJAER/September-October 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

रामचरितमानस की प्रासंगिकता वर्तमान परिदृश्य *में*

बृहस्पतु सिंह विशाल

सहायक प्राध्यापक हिंदी , चंद्रपाल डड़सेना शासकीय महाविद्यालय पिथौरा, जिला महासमुंद (छ. ग.)

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

सार

16 वीं शताब्दी के संत और कवि तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदू धर्म का एक पूजनीय ग्रंथ है जो भगवान राम के जीवन और गुणों का वर्णन करता है। वर्तमान परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता इसकी सार्वभौमिक नैतिक शिक्षाओं में निहित है, जो नैतिक दुविधाओं, सामाजिक न्याय और धर्म की खोज जैसे समकालीन मुद्दों के साथ प्रतिध्वनित होती है। सामाजिक अशांति, पर्यावरणीय संकट और नैतिक संघर्ष जैसी वैश्विक चुनौतियों के युग में , रामचरितमानस नेतृत्व, न्याय, पारिवारिक मूल्यों और ईमानदारी, करुणा और भक्ति के महत्व पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। बुराई पर अच्छाई की जीत, विनम्रता के महत्व और सामाजिक संतुलन बनाए रखने में धर्म की भूमिका पर पाठ का जोर कालातीत ज्ञान प्रदान करता है जो आधुनिक समय की चुनौतियों का सामना करने में व्यक्तियों और समुदायों का मार्गदर्शन कर सकता है। इसके अलावा, रामचरितमानस में आध्यात्मिक पाठ व्यक्तिगत विकास और मानसिक शांति के लिए एक मार्ग प्रदान करते हैं, जो आज की तेज़-तर्रार, अक्सर तनावपूर्ण दुनिया में महत्वपूर्ण है। ग्रंथ की शिक्षाओं पर चिंतन करके, व्यक्ति जिम्मेदारी, सहानुभूति और लचीलेपन की भावना विकसित कर सकते हैं, जो व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण दोनों में योगदान देता है।

मुख्य शब्द: *रामचरितमानस, प्रासंगिकता, वर्तमान परिदृश्य में*

परिचय

16वीं शताब्दी के महान संत और कवि तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदू परंपरा में सबसे प्रभावशाली और व्यापक रूप से पढ़े जाने वाले ग्रंथों में से एक है। यह भगवान राम की महाकाव्य कहानी, उनके गुणों और धर्म (धार्मिकता) को बनाए रखने में उनके सामने आने वाली चुनौतियों को प्रस्तुत करता है। यह पाठ मूल रूप से ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का पुनर्कथन है, और न केवल इसकी आध्यात्मिक गहराई के लिए बल्कि मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों को आकार देने में इसके सांस्कृतिक महत्व के लिए भी पूजनीय है। वर्तमान युग में, रामचरितमानस की शिक्षाएँ गहन प्रासंगिकता रखती हैं, क्योंकि यह आधुनिक समाज की जटिलताओं और चुनौतियों के बीच एक धार्मिक जीवन जीने का खाका पेश करती है। भगवान राम के जीवन की कथा साहस, करुणा, निष्ठा, कर्तव्य और न्याय जैसे गुणों पर कालातीत सबक प्रदान करती है, जो सामाजिक असमानता, राजनीतिक अस्थिरता और नैतिक संघर्ष जैसे समकालीन मुद्दों को संबोधित करने में प्रासंगिक हैं। इसके अलावा, पाठ नैतिक सिद्धांतों का पालन करने, पारिवारिक बंधनों को मजबूत करने और समाज के भीतर सद्भाव को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित करता है। यह परिचय यह पता लगाने का प्रयास करता है कि रामचरितमानस की शिक्षाएँ आज की तेज़-तर्रार, अक्सर अनिश्चित

दुनिया में व्यक्तियों को कैसे प्रेरित करती हैं, नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन करती हैं और आध्यात्मिक सांत्वना प्रदान करती हैं। इस पवित्र ग्रंथ में समाहित तुलसीदास का ज्ञान नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो इसे आधुनिक युग की जटिलताओं को नेविगेट करने के लिए एक आवश्यक संदर्भ बनाता है।

श्रीरामचरितमानस की रचना का उद्देश्य मानवता की स्थापना के साथ-साथ मूल्यपरक चिन्तन दृष्टि का विस्तार करना है। मानस की सीमा में केवल और केवल मनुष्य ही नहीं सम्पूर्ण प्राणि वर्ग है जिनकी मंगल कामना ही मानस की रचना का लक्ष्य है, उसका सम्बन्ध किसी जाति, वर्ग विशेष से नहीं अपितु प्राणिवर्ग का कल्याण उसकी मंगल आशा है। आज जब वर्तमान में साम्प्रदायिकता सम्पूर्ण विश्व की सबसे बड़ी समस्या है, अराजकता की स्थितियाँ क्षण-क्षण निर्मित की जा रही हैं तब तुलसी की ये पंक्तियाँ याद आती हैं जब उन्होंने लिखा था-

"**परहित सरिस धर्म नहीं भाई**

पर पीड़ा समहित अधमाई ।" कुमार सिहाग)

राज्य भी कुछ इन्हीं लक्षणों के साथ हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है लेकिन अन्तर केवल इतना है कि वर्तमान लोकतान्त्रिक देशों को राम की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था से सीखने की आवश्यकता है। राम के राज्य का केन्द्रीय पक्ष शासन न होकर जनता या लोक का पक्ष है जो वास्तविक रूप में प्रस्तुत हुआ है। आज हर तरफ विद्वेष, छल, कपट, दम्भ, अत्याचार, अनाचार का बोलबाला है लेकिन राम के राज्य में सर्वत्र समानता और शान्ति व्यवस्था की स्थापना थी- "**वैर न कर काहू सन कोई, राम राज्य विषमता खोई ।**" (श्रीरामचरितमानस, सप्तम सोपान उत्तरकाण्ड योगेन्द्र प्रताप सिंह)

आज विश्व आतंकवाद की समस्या से ग्रसित है। चारों ओर अशान्ति का वातावरण है, भ्रष्टाचार ने अपनी जड़े जमा ली हैं, हम अपने परिवारों से दूर होते जा रहे हैं तब हमें मानस के राम से सीखने की आवश्यकता पड़ रही है, भगवान राम की सबसे बड़ी विशेषता थी त्याग की जो उनको मर्यादा पुरूषोत्तम बनाती है। राम स्वयं के लिए नहीं दूसरों के लिए जिए हैं। मानस में एक भाई का भाई के प्रति त्याग, पत्नी का पति के प्रति समर्पण, पुत्र का माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी होना, हमें दृष्टिगत होता है। वर्तमान को इन मूल्यों की सबसे अधिक आवश्यकता है। तुलसी ने राम ने अपने जीवन में उन मूल्यों को समझा जिससे सामाजिक सौहार्द की स्थापना हो सके। उन्होंने स्व-हित से ऊपर उठकर सामाजिक मूल्यों को दृढ़ किया जिसमें उनके विचारों में समाजवाद की विशेषताओं के दर्शन होते हैं। आज का युग लोकतन्त्र का युग है जहाँ हर राज्य अपने अनुसार अपने राज्य का विकास कर रहा है और प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना कर रहा है। राम का मानस में लिखा है-

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,

सोई नृप अवसि नरम अधिकारी ।

(श्रीरामचरितमानस टीकाकार- हनुमान प्रसाद पोद्दार)

अब वर्तमान को इस सिद्धान्त को बड़े ही सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए तभी लोकतंत्र की सार्थकता सिद्ध होगी। भारत भूमि पर तभी तो महात्मा गाँधी ने राम-राज्य की अनूठी एवं सिद्ध शासन-प्रणाली को लागू करना चाहा था। जब राम ने भरत को राज्य को संचालित करने की शिक्षा दी तब उन्होंने बताया कि राज्य संचालन में सदाचारी और सज्जन व्यक्ति ही होने चाहिए जो निष्कपट और निश्छल हों परन्तु आज के समाज में निष्कपट और निश्छल तो बहुत दूर के शब्द जान पड़ते हैं। वर्तमान समाज तो क्षुद्रताओं से परिपूर्ण हो चुका है और राम सभी क्षुद्रताओं से मुक्त स्वार्थ सम्बन्धों से ऊपर उठे हुए उदात्त व्यक्तित्व धारण किए हुए एक आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत हैं। वर्तमान

मातृशक्ति खतरे में है, बहन और बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं। हर पल हर क्षण असुरक्षा की भावना से डरी हुई हैं, किसी के ऊपर विश्वास नहीं कर सकती लेकिन राम के राज्य में जब रावण माता सीता का हरण करके लेकर जाता है तब भी वो सुरक्षित थीं। मानस का वह व्यक्ति जो राक्षस- रूपी है उसके शासन में भी स्त्रियों को सम्मान प्राप्त है और सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, लेकिन आज हम उस लोकतांत्रिक व्यवस्था में हैं जहाँ स्त्री - अस्तित्व ही खतरे में हैं, तब ऐसे में मानस की प्रासंगिकता दृष्टिगत होती हैं। कलिकाल की दशा का वर्णन करते हुए तुलसी ने उत्तरकाण्ड में लिखा है-

"कलिकाल बेहाल किए मनुजा,

नहिं मानत कोइ अनुजा तनुजा ।"

(रामचरितमानस, गीताप्रेस)

प्राप्त होता हुआ लगता है। अनास्था, भय और दुराचार से ग्रसित इस दौर में जब चारों ओर विसंगतियाँ व्याप्त हो चुकी हैं, तब मानस जीवन में सार्थकता को लेकर उपस्थित होता है, जिसमें लोककल्याण एवं लोकमंगल की भावना निहित है आज का युग जब स्वार्थपरता में डूब चुका है तब मानस के राम का व्यक्तित्व हमारे सामने उपस्थित होता है, जिसमें हम राम का वह रूप देखते हैं जहाँ राम दूसरों के अधिकारों की रक्षा करके दुनिया का सबसे बड़ा न्याय करते हैं। उन्होंने राजा होकर स्वयं प्रजा के दुःख और कष्टों का अनुभव किया। शास्त्रों के अनुसार जब राजनीति में धर्म आ जाए तो राजनीति नैतिकता से परिपूर्ण हो जाती है और यदि धर्म में राजनीति आ जाए तो अधर्म हो जाता है और समकालीन परिदृश्य में यही हो रहा है, धर्म में राजनीति ने आकर अधर्म को प्रसारित कर दिया है। वर्तमान में लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जनता को केवल मतदाता के दृष्टिकोण से देखा जाता है और शुचिता की अत्यधिक कमी है। इन दोनों तत्वों के संतुलन से एक बेहतर राज्य का निर्माण किया जा सकता है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो हमारा राज्य दोनों स्तर पर असफल ही नजर आता है क्योंकि राज्य तो केवल और केवल स्वार्थपरतावश चल रहा है मानस में राम के राज्य की अवधारणा निःसंदेह मानवीय है। जहाँ प्रकृति का संतुलन बड़े सहज रूप में दिखाई देता है। वर्तमान और तुलसी के मानस की जब तुलना करके देखते हैं तो जैसे तालाब और समुद्र का अन्तर नजर आता है, जहाँ वर्तमान परिदृश्य में मानव-मानव में विद्वेष है वहीं दूसरी ओर मानस में पशु-पक्षी, पेड़-पौधे कितने फल-फूल रहे हैं। हम अग्रलिखित पंक्तियों में देख सकते हैं-

"फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन, रहहिं एक संग गज पंचानन ।

और तब ऐसे में मानस की ये पंक्तियाँ **'खग-मृग सहज बयरू बिसराई, सबहिं परस्पर प्रीति बढ़ाई '** अनुकरणीय हो जाती हैं-

"पुत्रवधू भगिनी सुत नारी, सुनु सठ कन्या सम हैं चारी।

इनहिं कुदृष्टि बिलोकई जोई, ताँहि बधे कुछ पाप न होई ।।

(रामचरितमानस, गीताप्रेस)

परिवर्तन समय और समाज का एक अनिवार्य हिस्सा है लेकिन ये परिवर्तन किस दिशा में हैं और कितने तर्कसंगत हैं, यह विचारणीय हैं। वर्तमान में गरीबी, बेरोजगारी चरम पर है, अपराधीकरण तेजी से बढ़ रहा है, अत्याचार हो रहे हैं, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है, संवेदनहीनता बढ़ रही है और इन सभी समस्याओं पर चिन्तन

करने के पश्चात जब हम मानस का चिन्तन और मनन करते हैं तब हमें इन सभी समस्याओं का समाधान जब मनुष्य में आक्रामकता, हिंसा और अनाचार के भाव प्रबल हो जाते हैं तब वो बड़े स्तर पर देश और समाज को हानि पहुँचाते हैं। आज वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य में जब चारों ओर आतंकवाद एक गम्भीर विषय बन गया है मानवता के लिए, जो समाज को हर स्तर पर कष्ट पहुँचा रहा है तब मानस की कथा समाधान लेकर उपस्थित होती है, जिसमें आतंकरूपी रावण को समाप्त करने के लिए तुलसी के सृजनकारी राम आते हैं, जो धैर्यवान हैं, आत्मत्यागी हैं, दृढ़संकल्पित हैं। ऐसे सृजनकारी राम अपने समाज को कष्टों से सुरक्षित रखने के लिए स्वयं दुःखों के पहाड़ पर चढ़ जाते हैं और मानवता की रक्षा और ऐसा दृष्टिगत भी हो रहा है। खातिर त्याग की भावना लिए हुए अन्त में विजयी होते हैं और आतंकरूपी रावण के अहं का नाश करते हैं। गोस्वामी जी ने मानस में ऐसे पुत्र का उल्लेख किया है जिसमें कहते हैं कि उसी पुत्र का जीवन सार्थक है जो अपने गुण एवं कर्म से पिता के हृदय को प्रसन्न कर दें। मानस में संयुक्त परिवार की सार्थकता को दिखाया गया है जिसमें यह व्यवस्था एक कवच के रूप में थी परन्तु वर्तमान भौतिक युग में आर्थिक तंत्र इतना प्रबल हो गया है जिसमें संयुक्त परिवार टूटते नजर आ रहे हैं। तब ऐसे में मानस का आदर्श अनुकरणीय हो जाता है-

उत्तरकाण्ड के अन्त में एक सात प्रश्नों का सन्दर्भ आता है। ये सात प्रश्न गरुड़ भुशुण्डि से पूछते हैं, जो अग्रलिखित हैं जिसमें पहला प्रश्न है कि-

"धन्य जन्म जगतीतल तासु

पितहि प्रमोद चरित सुनि जासु ।।"

(वर्तमान में तुलसीदास लिखित रामकाव्य की प्रासंगिकता - एक लेख)

क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार मानस में पात्रों को कार्य सौंपे गये जहाँ हमें व्यक्ति प्रबन्ध का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मिलता है अर्थात् जो जिस योग्य था उसको वैसा ही काम दिया गया, लेकिन वर्तमान इसके एकदम विपरीत है। अतः वर्तमान को आवश्यकता है मानस से सीखने की। आज की शासन सत्ता मानस की शासन सत्ता जैसी नहीं है जिसमें कहा गया है कि यदि उससे कोई अनीति या अन्याय हो जाए तो उसे बिना किसी भय के डांटा जाए। तुलसी ने लिखा है कि लोकमत के अनुसार ही राजा को कार्य करना चाहिए लेकिन आज के परिदृश्य में लोकमत नहीं स्वमत की ही अवधारणा सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य के आचरण और व्यवहार से ही सामाजिक सन्तुलन जैसी विचारधारा स्थापित हो सकती है। धर्म का आचरण, समाज के प्रति कर्तव्य, नैतिकता, मानवता भाई का भाई के लिए कर्तव्य, पुत्र का माता -पिता के लिए कर्तव्य, पति-पत्नी का परस्पर कर्तव्य, ये सभी समाजिक सन्तुलन के ही सन्दर्भ हैं। सभी में स्नेह हो, सभी से प्रेम हो, समानता से पूरित समाज हो ऐसी व्यवस्थाएँ सामाजिक संतुलन के संतुलन के आधार पर ही स्थापित हो सकती हैं। तब हम देखते हैं कि सामाजिक सन्तुलन की यह व्यवस्था आज के समय में कितनी सफल हो पा रही है, क्योंकि मानस में तुलसी ने जिस प्रकार सामाजिक संतुलन स्थापित किया है यदि उसका अनुकरण वर्तमान शासन-सत्ता और आज का परिदृश्य कर ले तो समाज में जो विसंगतियाँ और असमानताएँ व्याप्त हो रही है, गरीब और अमीर की खाईं बढ़ती जा रही है. ये सब समाप्त हो जायेंगी और एक सकारात्मक राज्य / समाज का जन्म हो सकेगा । इसलिए वर्तमान परिदृश्य को मानस का अनुकरण करना अति महत्वपूर्ण हो गया है। सबसे दुर्लभ शरीर कौन है? इसमें कवि मानव जाति की विशिष्टता और उसकी सर्वोच्चता का प्रतिपादन करता नजर आता है। मनुष्य जाति के विषय में ऐसा प्रश्न पूछ कर कवि मानस को प्रत्येक काल के समसामयिक बना देता है ।

दूसरा प्रश्न करते हैं कि मानव जाति का सबसे बड़ा दुःख क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि 'नहीं दरिद्र सम दुःख जग माहीं अर्थात् आर्थिक कमजोरी (गरीबी) से बड़ा कोई दूसरा दुःख नहीं है जहाँ आज के समय में यह स्थिति बड़ी भयावह दिखाई देती है। कवि ने कई दुःखों का उल्लेख किया है जहाँ आध्यात्मिक पीड़ा, दैविक सन्ताप और भी कई कष्ट लेकिन गरीबी से बड़ा कोई कष्ट नहीं है। यह दृष्टिकोण मानस की आदर्शवादिता के साथ-साथ उसका यथार्थवादी होना भी बता रहा है, जहाँ जनता की या लोक की वास्तविक पीड़ा का अनुभव किया है। इतना कटु एवं यथार्थ से जुड़ा उत्तर मानस को और समसामयिक बना देता है।

तीसरा प्रश्न करते हैं कि सन्त के लक्षण क्या हैं? तब कवि इस प्रश्न के उत्तर में कहता है कि वह व्यक्ति जो परमार्थ के लिए अपना जीवन समर्पित कर चुका हो क्योंकि, जो हित करने के लिए त्याग की भावना रखता होगा वही बिना किसी आसक्ति के व्यक्ति को सही दिशा प्रदान कर सकता है। वर्तमान की बात करें तो आज के संत को मानस के संत का अनुकरण करना होगा क्योंकि आज के संत ने संत की परिभाषा को ही गलत सिद्ध कर दिया है। आज का संत केवल और केवल लोभ, लाभ, स्वार्थपरता, धनार्जन बस इन्हीं सबके लिए संत बनता है, समाज को भटकाता है, सही दिशा नहीं दिखाता अपितु समाज का ही शोषण करता है और स्वयं कुमार्गी होता है। चौथा प्रश्न पूछते हैं कि असन्त के क्या लक्षण हैं? तब कवि कहता है कि 'संत सहहिं दुःख पर हित लागी, पर दुःख हेतु असन्त अभागी ।'

पांचवां और छठा प्रश्न कहता है कि सबसे बड़ा पुण्य क्या है? और सबसे बड़ा पाप क्या है? तब कवि कहता है कि सबसे बड़ा पुण्य अहिंसा है और सबसे बड़ा पाप दूसरों की निंदा है। मनुष्य और सम्पूर्ण प्राणियों की रक्षा से बढ़कर आज के युग में कोई दूसरा पुण्य नहीं हो सकता और इस तरह कवि ने जीव दया तथा रक्षा भावना को सर्वोपरि स्वीकार किया। वर्तमान समाज जब चारों ओर नृशंस हत्या और पाप से व्याप्त हो गया हो तब मानस की अहिंसा सबसे अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

सातवां प्रश्न और अन्तिम प्रश्न पूछते हैं कि मानस रोग क्या है? इस प्रश्न के माध्यम से कवि मानव जाति के एक शाश्वत् प्रश्न को उठाता है। उत्तरकाण्ड में कवि ने न केवल सम्पूर्ण मानव जाति को संकटहीन देखना चाहा है अपितु उससे हमेशा के लिए मुक्ति की खोज में है। मानस रोग इतना असाध्य है कि व्यक्ति उससे छुटकारा पाने के लिए अनेक वृत्त और उपाय करता है।

जब समाज नैतिक अधःपतन की ओर अग्रसर हो, नैतिक मर्यादाओं का ह्रास होता जा रहा हो, जहाँ मूल्यों का क्षरण हो रहा हो तब समस्त मानव जाति के समक्ष मानस की प्रासंगिकता कितनी आवश्यक हो जाती है इसको इसको तुलसी की रामचरितमानस में बड़ी गहराई के साथ महसूस किया जा सकता है। वर्णाश्रम व्यवस्था में जहाँ दान, दया, धर्म, परोपकार की अवधारणा थी वहीं अब उनका स्थान कामुकता, विवेकहीनता, कटु वचन, निन्दा, ईर्ष्या आदि ने ग्राह्य कर लिया है, इन्हीं बुराईयों का बोलबाला हो चला है। वर्तमान समाज में जाति व्यवस्था जैसी बुराइयाँ फैलती जा रही हैं, जो समाज का कोढ़ है। वहीं मानस में शबरी और केवट प्रसंग इन बुराइयों पर चोट करता नजर आता है। वर्तमान परिदृश्य को मानस के प्रत्येक चरित्र / पात्र को अनुकरण करने की आवश्यकता है चाहे वह रावण ही क्यों न हो। उसने भी उन मूल्यों की रक्षा की जहाँ स्त्री के अस्तित्व की बात थी। माता सीता का हरण करने के पश्चात् भी उनको कभी स्पर्श तक नहीं किया। वर्तमान का दानव क्या मनुष्य भी इस प्रवृत्ति का नहीं है। वर्तमान का मनुष्य बस भेड़िया बनता जा रहा है।

जिस व्यवस्था को लागू करने के लिए गाँधी जी ने सबसे अधिक प्रतिबद्धता प्रकट की और उसी व्यवस्था में अपना विश्वास दिखाया। तुलसी के राम ने जिन आदर्शों को प्रस्तुत किया वह वास्तव में कितने यथार्थ हैं इस पर विचार करने की आवश्यकता है। जहाँ एक व्यक्ति राजा के कुल में जन्म लेता है जो युवराज है, उसने उन सभी मान्यताओं का

खण्डन कर दिया जिससे राजकुल की पहचान होती थी। बहुपत्नी प्रथा का खण्डन करके उन्होंने सही अर्थों में मर्यादा पुरूषोत्तम के होने की विशेषता को प्रस्तुत किया इसीलिए लक्ष्मण के आदर्श उनके पिता नहीं अपितु बड़े भ्राताश्री थे। तुलसी के राम ने गुरु आज्ञा का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया जो गुरुकुल में रहकर श्रम करने से कतई कतराते नहीं थे। वह चाहते तो युवराज होने के नाते उन्हें राजगद्दी भी मिलती और शासन-सत्ता उनके हाथ में होती क्योंकि जनता भी तो उनको चाहती थी लेकिन उन्होंने उस आदर्श को प्रस्तुत किया जहाँ पिता की आज्ञा सर्वोच्च थी। अतः रामचरितमानस से वर्तमान समाज को ये सभी आदर्शों और सिद्धान्तों को सीखने की आवश्यकता है ताकि हम एक सभ्य समाज का निर्माण कर सकें। जहाँ मानस इतनी शताब्दियों के पश्चात वाल्मीकि रामायण से अधिक लोकप्रिय हुआ है, वहीं सम्पूर्ण देश में लगभग प्रत्येक घर में मानस मिल जायेगा। मंगल भवन अमंगल हारी मनुष्य क्या पक्षी भी गाने लगते हैं। जहाँ तोता-मैना भी इसका तन्मयता के साथ गान करते हों, वहाँ मानस की प्रासंगिकता इससे अधिक क्या हो सकती है। अतः समन्वय की अवधारणा लिए हुए वर्तमान समाज में और भविष्य में मानस की प्रासंगिकता सदैव विद्यमान रहेगी।

कवि ने जिस अवधारणा या विचार की स्थापना की वे समस्त मानव जाति तथा प्राणि-वर्ग के लिए उनके हित से सम्बद्ध हैं। सामाजिक अधःपतन एवं भौतिकता से व्याप्त, विषमता से मानव समाज पीड़ित होता जा रहा है, इन्हीं स्थितियों को देखकर कवि के हृदय में छटपटाहट है और वह कहीं न कहीं इससे मुक्ति के मार्ग भी सुझाता है और निदान भी प्रस्तुत करता है। कवि ने राम का जो चरित्र प्रस्तुत किया है वह बड़े ही सकारात्मक रूप में मानव समाज के समक्ष उभरकर सामने आता है और जो अपने कार्यों, सिद्धान्तों और आदर्शों से ऐसे राज्य की स्थापना करता है कि बाद में वही राज्य अनुकरणीय हो जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, रामचरितमानस एक कालातीत और प्रासंगिक ग्रंथ है जो आधुनिक दुनिया में गहन ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करता है। भगवान राम के गुणों का चित्रण - जैसे ईमानदारी, करुणा और धर्म के प्रति प्रतिबद्धता - एक नैतिक दिशा प्रदान करता है जो नैतिक दुविधाओं, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत संघर्षों सहित समकालीन सामाजिक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आवश्यक है। तुलसीदास का बुराई पर अच्छाई की जीत, निस्वार्थ कर्तव्य के महत्व और विनम्रता के मूल्य पर जोर आज की जटिल दुनिया में व्यक्तिगत और सामूहिक विकास का मार्ग प्रदान करता है। इसके अलावा, रामचरितमानस आध्यात्मिक सांत्वना के स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो आंतरिक शांति, आत्म-प्रतिबिंब और लचीलेपन को बढ़ावा देकर व्यक्तियों को आधुनिक जीवन के तनावों और अनिश्चितताओं से निपटने में मदद करता है। इसकी शिक्षाएँ, प्राचीन परंपरा में निहित होने के बावजूद, समय और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करती हैं, जिससे वे सार्वभौमिक रूप से लागू होती हैं। आध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शक के रूप में, रामचरितमानस न केवल व्यक्तिगत चरित्र को मजबूत करता है, बल्कि एक सामंजस्यपूर्ण समाज का पोषण भी करता है, व्यक्तियों को ईमानदारी, सहानुभूति और व्यापक भलाई के प्रति कर्तव्य की भावना के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, रामचरितमानस ज्ञान का प्रकाश स्तंभ बना हुआ है, जो व्यक्तियों को धार्मिक जीवन जीने और अधिक न्यायपूर्ण, दयालु और कर्तव्य की भावना के साथ दुनिया में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीरामचरितमानस - पोद्दार) । टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार
2. श्रीरामचरितमानस सप्तम सोपान योगेन्द्र प्रताप सिंह (लोकभारती प्रकाशन) ।

3. तुलसी साहित्य में रामराज्य की कल्पना - डा० नरेश कुमार सिहाग |
4. रामकथा में रामचरितमानस सम्पूर्ण प्रेरणा स्त्रोत - - अनीता रानी (एक शोध पत्र) ।
5. श्रीरामचरितमानस - गीताप्रेस गोरखपुर ।
6. वर्तमान में तुलसीदास लिखित रामकाव्य की प्रासंगिकता - एक लेख ।
7. शर्मा पंडित। यज्ञ एक समग्र उपचार प्रक्रिया। द्वितीय संस्करण, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा: 281003. 1998.
8. शर्मा पं.श्रीराम. ऋग्वेद. युग निर्माण योजना मथुरा। 1965. https://archive.org/details/rigvadsanhita-hindi-part-1-pt.-shri-ram-sharmacharya/mode/2up पर उपलब्ध है
9. कौशिक अशोक। श्रीमद्भागवत गीता. अध्याय 3 श्लोक 10. स्टार प्रकाशन प्रा. लिमिटेड दिल्ली. 1994. पृ. नहीं। 81-82 https://archive.org/details/in.gov.ignca.279 पर उपलब्ध है
10. पोद्दार हनुमान प्रसाद। तुलसीकृत रामचरित मानस। गीताप्रेस गोरखपुर। 1986.
11. वाल्मिकी। श्रीमद्वाल्मीकि रामायण. गीताप्रेस गोरखपुर। 2017. https://archive.org/details/ shrimad-valmiki-ramayana-hindi-editionvalmiki/mode/2up पर उपलब्ध है